सं. भ्रो. विं/फरीदाबाद/41-85/15521.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० राल ब्राह्म आटोमैटिव सम्पोनैंट लि॰. 1411, मधुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री निरंजन गर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद सिखित मामले में कोई श्रीशोगिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रयं, भौद्योगिक विवाद ग्रिविनयम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविग्रचना सं. 5415-3-भम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिविग्रचना सं. 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/1:245. दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रविनियम। की धारा 7 के श्रवीत गठित श्रम न्यायालय, फरोदावाद, को विवादग्रस्त या उससे स्मांगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामल न्यायनिर्णय के लिए निविध्य करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद सं मुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

स्या श्री निरंजन शर्मा की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?
संश्री विश्/फरीदाबाद/32-85/15528.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं श्रीहरावत इन्जी वर्कस,
प्लाट नंव 214, सैक्टर-24 फरीदाबाद, के श्रीमक श्री राम सेबक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामसे
में कोई भीदोगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए. अव. श्रीद्योगिक विवाद श्रिधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415~3-श्रम 68/15254. दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पहते हुए प्रश्निसूचना सं० 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधितियम की द्वारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितर्णय के लिये निविष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या की राम सेवक की सेवाफो का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 15 भ्रप्रैल, 1945

मं स्रो.वि./यमुनानगर/115-84/15660.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० जनरत मैनजर, हरियाणा राज्य परिवहन, यमुनानगर (2) परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डीगड़, के श्रमिक श्री सुरेश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है ;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैत् निर्दिग्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अव, श्रीक्षोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, प्रम्वाला के विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णत्र के लिए निर्दिण्ट करते है, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री मुरेश कुमार की सेवाश्रों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

रं बो.िन/हरीर बाद/20-85/15687---**चूँकि ह**रिगाणा के राज्यसाल की राव है। कि मै० कल्द बाटो लि. प्लाट नं. 171-112, भेरटर 6, फरोदावाद के श्रमिक श्री ब्रोग प्रकाश तथा। उसके ब्रबत्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित भागले में कोई घोडोगिक विवाद है ;

ष्रो^र चूंकि हरियाणा के राज्यसान विवाद को न्यायनिर्मय हेतु निर्दिष्ट करना वां**छनीय** समझसे हैं ;

रम्मिष्, नव, भी ग्रोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की चारा 10 की उपचारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा भवान की गई गिवारों का नरीन करते हुने, हरियाणा के राज्य गान इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं. 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, में ताप पहने हुने प्रिन्तन्ता सं. 11495-मो-अप/१९-४न/६७/१1245, दिनांक 7 फरवरो, 1958, द्वारा उस्त प्रिवितियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला ध्यायाने में ये के तिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत सम्बन्धित मामला है:—

ज्या श्री श्रीम प्रकाण की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्री. वि./रोहतक/240-84/15694.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग्ने है कि (1) मै॰ त्रेयरमैन, हरियाणा कोरेस्ट डिवैनरावेन्ट वॉर्ड, चण्डोगड़ 2. फोरेस्ट डिविजनल ग्राफ़िसर, प्रोडन्शन डिविजन, रोहतक के श्रीमक श्री राम नारायण तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीडोगिक विदाद है;

श्रीर च्ंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रविनियम, 1947, को बारा 10 की उप-श्वारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रवान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रशिक्षचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनोक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिक्षिस्चना सं. 3864-ए. एन.श्रो.(ई)-श्रम-70/1348, दिनांक ं मई, 1970 द्वारा उक्त प्रशिवियम की बारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उत्तरे मुसंगत या उन्नरे नम्बन्तिय तांचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेतु निविद्ध करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है में उन्नर विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :---

क्या औ राम नारायण की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो०वि०/फरीदावाद/51-85/15704.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० मोर्य उद्योग लि.. सोहना रोड, सैक्टर 25 बल्लबयद के श्रमिक श्री श्री हुन्ण मोर्य तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीटोगिक विवाद है;

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इ सलिये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसृचन सं० 5415—3—अम-68/15254, दिनांक 20, जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जी—अम88—अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उवत अधिनियम की घारा 7 के ऋधीन गृहत अम ग्यायालय, परीदाबाद, को दिवाद इस्त या उससे स्वरंगत वा उसरे सन्दृष्टित नीचे विचार मामला है जो कि प्रवन्धकों सथा अभिकों के बीच या सो विवार प्रस्त मामला है या दिवाद से दुर्गत अधवा सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री श्री हुल्ला मोर्य की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं थी. वि./परीदाबाद/18-85/15711.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राग है कि मैं. मोर्या उद्योग लि. सोहना रोड सैक्टर-25, बल्लवगढ़, के श्रमिक श्री जय भगवान तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये. ग्रव, भौधोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपवारा (1) खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा ने राज्यपाल इसके हारा सरकारी ग्रिधिसचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून. 1968 के साथ पढ़ते हुये श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम ६८-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा रण्ट शिवियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री जय भगवान की सेवाश्रों का समापन त्यामोचित हथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह विराणहर का हकतार है ?

संग्रांग्विन्। कि हिरियाणा के राज्यपाल कि राय है कि मैंश्याकिट कमेटी पिलुखेड़ा (जीन्द), के श्रमिक श्री रामेक्वर प्रसाद तथा उसके प्रबन्धकों के विच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रीर नृकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिषय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रव, ग्रीद्योगिक विशाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिन्तियों का अयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं० 9641-1-श्रम-70/32575, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित सरकारी ग्रीधसूचना सं. 3864-ए-एस-ग्रो. (ई)-श्रम/70/1348, दिनांक 8 मई, 1900, द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हैं विचित्र करते हैं, जो कि उक्त प्रदन्धकों तथा श्रमिक के शेष्ट्र या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री शमेण्डल प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं शोशिव शिवानी/८८-84/15725.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राय है (1) मैं शिवहन आयुक्त, हरियाणा, नाशियह, (2) हरियाणा राज्य परिवहन शिवानी, के श्रीमक श्री हरि सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद का न्याय निर्णय हेतु निदिग्ट करना बांछनीय समझते है;

इसिलये, अब, अधिगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिनाों कर प्रयोग करों दूर हरियान के राज्यान इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम 70/32573, दिनांक 6 नवस्यर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं० 3884-ए-एस-प्रो. (ई)-श्रम/70/1348, दिनांक 3 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद प्रस्त या उसके मुसंगत या उससे मम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या दिवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री हिंदि सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह विक्त काहत का हवता है ?

सं. मो.वि /सोनीपत/159-83/15733.—-चूंकि द्रिरियाणा के राज्यपास की राय है कि मैं अनरल मैनेजर, दी सोनीपत विस्ट्रीक्ट को. स्रोपरेटिव मिल्क प्रोडुसर यूनियन लि. सीनीपत, के श्रीक्कों सी प्रेम सिंह तथा उसके प्रवश्वकों के बीच इसकें इसके बाद शिक्षित मामने में कोई सीबोणिक विवाद है ;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्जय हेतु निर्विष्ट करना बांक्नीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, श्रीडोपिक विवाद श्रिथितयम, 1947. की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रशोग करते तुर, हिरियाणा के राज्यपाल इसके वारा प्रश्तारी प्रिम्नसूचना सं. 9641—1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 है साथ गठित सरकारी अिम्नसूचना सं. 3864—ए-एस-श्रो-(ई)श्रम-70/70/1348, विनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त प्रविनियम की खारा 7 के प्रश्नोन गठित श्रम न्यायालय, रोवतक, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला ग्यायिनवैय के लिए निविष्ट करते हैं, भो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादशस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :---

क्या थी प्रेम सिंह की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? बदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है? -दिनांक 15 ग्राप्रैल, 1985

सं.श्रो. वि./पानीपत/32-85/15927.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं भुपर रवड़ इण्टरप्राईजिज जी. टी. रोड़, करनाल, के श्रमिक श्री बाबू लाल तया उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद हैं ;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रव, ग्रीशोगिक विवाद ग्रिधिनियम. 1947 की धारा 10 की उपधारा (!) के खण्ड (ग) क्षारा प्रदान को गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3(44)94-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रेल, 1984, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिश्ट करने हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री वायु लाल की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं थो वि./पानीपत/41-85/15933.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. वजःज इन्डस्ट्रीज, इन्डस्ट्रीयल एरिया, कुन्भपुरा रोड़, करनात, के श्रमिक श्री फकीर चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद जिखित मामले में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विजाद श्रीधिनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई श्रीक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 3(44)—84—3—श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रीधिनयम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम त्यायालय. श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है शा विवाद से स्संगत श्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री फकीर चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 19 अप्रैल, 1985

सं• श्री वि/फ़रीदाबाद/100~83/16563.—चूंकि **इरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰** परिवहन श्राय्क्त, हरियाणा, चण्डीगढ़ (2) हरियाणा राज्य परिवहन, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री राम शंकर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामसे में कोई श्रीकोणिक विवाद है;

भीर वंकि हरियाका के राज्यवाल विवाद को श्वायितर्गय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीक्षोगिक विवाद श्रीक्षितियम, 1947, की क्षारा 10 की उपकारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिलियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीक्ष्म्चना सं. 5415-3-श्रम-68/15254. दिनोक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीक्ष्मूचना सं० 11495-जी-श्रम-१८-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी. १९5९ द्वारा उक्त श्रीक्षित्यम की धारा 7 के श्रिक्षीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संवन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संवन्धित मामला है :—

क्या !श्री राम शंकर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि व | फरीदाबाद | 46-85 | 16871 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व मार्डको मशीन टूरज, 31-सी, डी.एल.एफ., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री भगवत प्रसाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीकोणिक विवाद है;

मौर चूंकि इरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निविष्ट करना विछनीम सनमते हैं;

इसलिये, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 6\$ 15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 गरा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद को विवादग्रस्त या उसके सुसंगत या उससे संबंधित नींवे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

बया श्री भगवत प्राप्त की से गर्थों का समारत न्या गेवित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?